परिशिष्टम् १ उपसर्गः

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» उपसर्गाः (Prefixes in Sanskrit)

प्रश्न 1 (आसान). संस्कृत में कुल कितने उपसर्ग होते हैं?
उत्तर – द्वाविंशतिः (२२)

प्रश्न 2 (आसान). उपसर्ग धातु के आगे (पहले) जुड़ते हैं या पीछे?
उत्तर – धातु के पहले (पूर्वम्)

प्रश्न 3 (मध्यम). 'सुशोभते' पद में से उपसर्ग अलग करके लिखिए।
उत्तर – सु (सु + शोभते)

प्रश्न 4 (कठिन). 'प्रति' और 'आ' दो उपसर्गों को 'गच्छति' के साथ मिलाने पर क्या रूप बनेगा?
उत्तर – प्रत्यागच्छति (प्रति + आ + गच्छति)

» कृत्-प्रत्ययाः (क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, क्तवतु)

प्रश्न 5 (आसान). 'पठित्वा' शब्द में कौन सा प्रत्यय है?
उत्तर – क्त्वा प्रत्यय

प्रश्न 6 (आसान). 'खादितुम्' का हिंदी अर्थ क्या होगा?
उत्तर – खाने के लिए

प्रश्न 7 (मध्यम). 'प्रणम्य' पद में धातु, उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए।
उत्तर – प्र (उपसर्ग) + नम (धातु) + ल्यप् (प्रत्यय)

प्रश्न 8 (कठिन). 'बालकः जलं पीत्वा गृहं गच्छति' – इस वाक्य में उपसर्ग युक्त करके 'पीत्वा' का ल्यप् प्रत्ययान्त रूप क्या होगा?
उत्तर – निपाय (नि + पा + ल्यप्)

» कारक-विभक्तिः (The Six Karakas and Cases)

प्रश्न 9 (आसान). 'रामः गच्छति' इस वाक्य में कौन-सा कारक और विभक्ति है?
उत्तर – कर्ता कारक, प्रथमा विभक्ति।

प्रश्न 10 (आसान). संस्कृत में कुल कितने कारक माने गए हैं?
उत्तर – छह (६) कारक।

प्रश्न 11 (मध्यम). 'रामः विमानेन अयोध्यां गच्छति' – रेखाङ्कित पद में कौन-सी विभक्ति है और क्यों?
उत्तर – तृतीया विभक्ति (करण कारक), क्योंकि विमान क्रिया का मुख्य साधन है।

प्रश्न 12 (कठिन). 'रामस्य पुत्रः लवः' – यहाँ 'रामस्य' में षष्ठी विभक्ति है, लेकिन इसे कारक क्यों नहीं माना जाता?
उत्तर – क्योंकि 'रामस्य' का क्रिया से सीधा संबंध नहीं है, यह केवल लव से संबंध बता रहा है।

» संबन्ध, संबोधन च उपपद-विभक्तिः

प्रश्न 13 (आसान). 'गुरु' शब्द में 'नमः' योग में कौन सी विभक्ति होगी?
उत्तर – गुरवे (चतुर्थी विभक्ति)

प्रश्न 14 (आसान). 'वृक्षस्य अधः' में 'वृक्षस्य' में कौन सी विभक्ति है?
उत्तर – षष्ठी विभक्ति

प्रश्न 15 (मध्यम). वाक्य सुधारिए: 'ग्रामस्य परितः वृक्षाः सन्ति।'
उत्तर – ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति। ('परितः' के कारण द्वितीया होगी)

प्रश्न 16 (कठिन). 'अलं कोलाहलेन' वाक्य में 'कोलाहल' शब्द में तृतीया विभक्ति क्यों आई है?
उत्तर – 'अलम्' (मना करने के अर्थ में) उपपद के योग के कारण 'कोलाहलेन' में तृतीया विभक्ति लगी है।

» स्वर-सन्धिः (अयादि च पूर्वरूप-सन्धिः)

प्रश्न 17 (आसान). 'शे + अनम्' की संधि क्या होगी?
उत्तर – शयनम् (ए + अ = अय्)

प्रश्न 18 (आसान). 'ते + अपि' की संधि क्या होगी?
उत्तर – तेऽपि (पूर्वरूप संधि)

प्रश्न 19 (मध्यम). 'गायकः' का संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का नाम लिखिए।
उत्तर – गै + अकः (अयादि संधि)

प्रश्न 20 (कठिन). 'विष्णो + अव' की संधि कीजिए और बताइए कि यहाँ अयादि संधि क्यों नहीं हुई?
उत्तर – विष्णोऽव। क्योंकि पद के अंत में 'ओ' के बाद 'अ' आने पर पूर्वरूप संधि का नियम लागू होता है, अयादि का नहीं।

» व्यञ्जन-सन्धिः rules (श्चुत्व, जश्त्व, अनुस्वार, परसवर्ण, णत्व)

प्रश्न 21 (आसान). तत् + चित्रम् की संधि क्या होगी?
उत्तर – तच्चित्रम् (श्चुत्व संधि)

प्रश्न 22 (आसान). गृहम् + गच्छ की अनुस्वार संधि कीजिए।
उत्तर – गृहं गच्छ

प्रश्न 23 (मध्यम). दिग्गजः शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का नाम लिखिए।
उत्तर – दिक् + गजाः (जश्त्व संधि)

प्रश्न 24 (कठिन). 'रामायणम्' शब्द में किस नियम से 'न्' का 'ण्' हुआ है?
उत्तर – णत्व-विधान नियम से (ऋ, र्, ष् के बाद न् का ण् हो जाना)।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. 'हृ' (हारः) शब्द में 'वि' तथा 'सम्' उपसर्ग जोड़ने पर बनने वाले नए शब्द और उनके अर्थ लिखिए।

› मूल शब्द है: हारः (माला / पराजय)।
› पहला उपसर्ग 'वि' पहले जोड़ेंगे: वि + हारः = विहारः (अर्थ: घूमना-फिरना)।
› दूसरा उपसर्ग 'सम्' पहले जोड़ेंगे: सम् + हारः = संहारः (अर्थ: विनाश करना या मारना)।

उत्तर – वि + हारः = विहारः (घूमना), सम् + हारः = संहारः (विनाश)

उदाहरण 2. निम्न पदों में धातु और प्रत्यय अलग कीजिए: (क) गन्तुम् (ख) आनीय (ग) हसितवान्

› स्टेप 1: 'गन्तुम्' में 'तुम्' शेष है, जो 'के लिए' अर्थ देता है -> गम् + तुमुन्।

› स्टेप 2: 'आनीय' में 'आ' उपसर्ग है और अंत में 'य' बचा है -> आ + नी + ल्यप्।

› स्टेप 3: 'हसितवान्' में 'वान्' अंत में है जो भूतकाल पुल्लिंग रूप है -> हस् + क्तवतु।

उत्तर – (क) गम् + तुमुन् (ख) आ + नी + ल्यप् (ग) हस् + क्तवतु

उदाहरण 3. वाक्ये रेखाङ्कितपदस्य कारकं विभक्तिं च लिखत – 'वृक्षात् पत्रं पतति।'

› पहला कदम: क्रिया पद पहचानो – 'पतति' (गिरता है)।

› दूसरा कदम: कहाँ से अलग हो रहा है? – 'वृक्षात्' (पेड़ से)।

› तीसरा कदम: पृथक्करण (अलग होने) के अर्थ में अपादान कारक होता है और पञ्चमी विभक्ति लगती है।

उत्तर – कारकम् = अपादानम्, विभक्तिः = पञ्चमी विभक्तिः

उदाहरण 4. कोष्ठक में दिए शब्द की सही उपपद-विभक्ति लगाकर वाक्य पूरा कीजिए: 'पिता _____ सह गच्छति।' (पुत्र)

› कदम 1: वाक्य में 'सह' शब्द आया है, जो एक उपपद है।

› कदम 2: नियम के अनुसार 'सह' के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

› कदम 3: 'पुत्र' शब्द रूप का तृतीया एकवचन 'पुत्रेण' बनता है।

उत्तर – पिता पुत्रेण सह गच्छति।

उदाहरण 5. संधि-विच्छेदं/संधिं कुरुत: (i) पो + अनः (ii) सर्वे + अपि

› पहला पद: पो + अनः। यहाँ 'पो' में अंत स्वर 'ओ' है और आगे 'अ' है। ओ + स्वर मिलकर 'अव्' बनता है (अयादि संधि)। प + अव् + अनः = पवनः।

› दूसरा पद: सर्वे + अपि। यहाँ 'सर्वे' पद के अंत में 'ए' है और आगे 'अ' आया है। पद के अंत में ए + अ आने पर 'अ' लुप्त होकर अवग्रह (ऽ) बन जाता है (पूर्वरूप संधि)। सर्वे + अपि = सर्वेऽपि।

उत्तर – (i) पवनः (अयादि संधि), (ii) सर्वेऽपि (पूर्वरूप संधि)

उदाहरण 6. सन्धिं कुरुत – (1) जगत् + ईशः (2) रामम् + वन्दे

› पहला उदाहरण: जगत् + ईशः। यहाँ प्रथम पद के अंत में 'त्' (प्रथम वर्ण) है और उत्तर पद के प्रारंभ में स्वर 'ई' है।

› जश्त्व नियमानुसार, प्रथम वर्ण 'त्' अपने वर्ग के तीसरे वर्ण 'द्' में बदल जाएगा। 'त्' + 'ई' = 'दी'।

› अतः जगत् + ईशः = जगदीशः।

› दूसरा उदाहरण: रामम् + वन्दे। यहाँ प्रथम पद के अंत में 'म्' है और उसके बाद व्यंजन 'व्' आया है।

› अनुस्वार नियमानुसार, 'म्' का अनुस्वार (ं) हो जाएगा।

› अतः रामम् + वन्दे = रामं वन्दे।

उत्तर – (1) जगदीशः (2) रामं वन्दे

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• बोर्ड परीक्षा में जब भी उपसर्ग अलग करने का प्रश्न आए, तो शब्द के शुरुआत वाले भाग को ध्यान से देखें – मूल धातु अपने आप अलग हो जाएगी!

• परीक्षा में धातु-प्रत्यय अलग करने का प्रश्न ज़रूर आता है। ध्यान रखें कि अगर शब्द के शुरू में उपसर्ग दिखे और अंत में 'य' हो, तो आँख बंद करके 'ल्यप्' प्रत्यय लिखें!

• परीक्षा में रेखांकित पद की विभक्ति पूछते हैं – 'धनात्' या 'वृक्षात्' जैसे (ात्) अंत वाले शब्द दिखे तो तुरंत अपादान पञ्चमी लिखना!

• परीक्षा में 'नमः', 'सह', और 'परितः' वाले वाक्य ज़रूर पूछे जाते हैं – इनके योग की विभक्तियाँ (क्रमशः चतुर्थी, तृतीया, द्वितीया) अच्छी तरह याद रखें।

• परीक्षा में अवग्रह (ऽ) वाले शब्द जैसे 'नमोऽस्तु' या 'तेऽपि' आते ही समझ जाना कि यह पूर्वरूप संधि है!

• बोर्ड परीक्षा में 'जगदीशः' और 'रामायणम्' का संधि-विच्छेद बार-बार पूछा जाता है; जश्त्व और णत्व नियम को अपनी उत्तर-पुस्तिका में साफ़-साफ़ लिखें।

एक नज़र में रिवीज़न

› उपसर्ग हमेशा धातु से पहले जुड़ते हैं और इनकी संख्या 22 (द्वाविंशतिः) होती है।

› क्त्वा (करके), ल्यप् (उपसर्ग+करके), तुमुन् (के लिए), क्तवतु (भूतकाल)।

› क्रिया से सीधा संबंध = कारक (कुल ६ कारक, प्रथमा से सप्तमी विभक्तियाँ)।

› विशिष्ट पद के योग से लगने वाली विभक्ति को उपपद-विभक्ति कहते हैं (उदा. नमः + चतुर्थी)।

› ए/ऐ/ओ/औ + स्वर = अय्/आय्/अव्/आव् (अयादि)। ए/ओ + अ = एऽ/ओऽ (पूर्वरूप)।

› व्यंजन संधि: श्चुत्व (त्->च्), जश्त्व (1->3), अनुस्वार (म्->ं), णत्व (न्->ण्)।